A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 02, April 2026 (Special Issue)

This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं संस्थागत संगीत शिक्षा का पाठयक्रम

Dr. Vandana Khurana
Assistant Professor Music Vocal, Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Published on 30 April, 2026

सार

प्राचीन काल में जहां संगीत कला ईश्वर स्तुति का साधन थी वहीं मध्य काल में राज दरबारों की शोभा बनीं । आधुनिक काल के प्रारम्भ में घरानों की संकीर्ण मानसिक से प्रभावित होकर संगीत कला पतन की ओर अग्रसर हुई किन्तु आधुनिक कालीन वैज्ञानिक-सामाजिक परिवर्तनों एवं विष्णु द्वय जैसे उध्दारकों ने भारतीय संस्कृति की इस अमूल्य धरोहर को शिक्षा की मूल धारा में एक विषय के रूप में जोड़ कर संरक्षित किया । इसके साथ ही इसके लिए निश्चित पाठयक्रम का प्रारम्भ भी हुआ । वर्तमान काल में हुए परिवर्तनों के अनुरूप अब उच्च स्तरीय संगीत विषय के पाठयक्रम में आधारभूत तत्वों के अध्ययन के साथ ही इसे प्रासंगिक एवं समकालीन परिवेश में सार्थक बनाने हेतु इसका अद्यतिकरण आवश्यक हो गया है ।

मुख्य शब्द:-पाठ्यक्रम ,प्रौद्योगिकी, प्रासंगिकता, अंतःविषयक दृष्टिकोण, अद्यतिकरण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 I

प्रस्तावना

आधुनिकता एवं परिवर्तन शिक्षा के क्षेत्र के बुनियादी तत्व हैं। आधुनिकता जहां समय का प्रतीक है वहीं परिवर्तन जीवन की निरंतरता को दर्शाता है। भारतीय संगीत कला में भी परिवर्तन होते रहे हैं जो कि विकास के द्योतक हैं। भारतीय संगीत शिक्षा के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो प्रत्येक काल की आवश्यकताओं के अनुरूप संगीत शिक्षा के उद्देश्य एवं स्वरूप में भी परिवर्तन हुए हैं और आधुनिक काल में हुए परिवर्तनों में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन था -शास्त्रीय संगीत का एक विषय के रूप में अन्य विषयों के समान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित होना। इस परिवर्तन ने विद्यार्थियों हेतु संगीत के क्षेत्र में विभिन्न संभावना के द्वार खोल दिए। आधुनिक काल में हुए वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी विकास ने प्रत्येक क्षेत्र में नवीन आयाम को स्थापित किया जिसके कारण संगीत शिक्षा के लक्ष्य-उद्देश्यों में परिवर्तन हुआ और विशेष रूप से उच्च शिक्षा के अंतर्गत। भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों में परिवर्तन दृष्टिपात हुआ। इन्हीं परिवर्तनों के कारण यह आवश्यक हो गया कि संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम का अद्यतिकरण कर उसे प्रासंगिक बनाया जाए। साथ ही समय के अनुकूल संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति(NEP) 2020 के अनुसार अंतःविषयक दृष्टिकोण का प्रयोग भी किया जाए।

प्रस्तुत लेख द्वारा उच्च शिक्षा के अंतर्गत भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रमों के तत्वों का विश्लेषण कर संगीत विषय की अध्ययन सामग्री की प्रासंगिकता का अध्ययन प्रस्तुत कर संगीत पाठ्यक्रम के अद्यतन हेतु नवीन आयामों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही अंतःविषयक दृष्टिकोण की भूमिका एवं महत्व के बिंदु भी प्रस्तुत किए गए हैं।

उद्देश्य

वर्तमान शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यवसायिक परिदृश्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय शास्त्रीय संगीत विषय के पाठ्यक्रम को प्रासंगिक बनाए रखने हेतु अद्यतिकरण के प्रयासों का अध्ययन करना तथा NEP 2020 के अनुरूप भारतीय शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रम में अंतःविषयक दृष्टिकोण को ग्रहण करते हुए पाठ्यक्रम में नवीन आयामों को सम्मिलित करने के संभावित परिणामों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि - प्रस्तुत शोध लेखन में मिश्रित शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है जिसमें शोध विषय से संबंधित साहित्य की समीक्षा तथा वर्णनात्मक विधि सम्मिलित है

भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा एवं पाठ्यक्रम

संगीत का उद्गम मानव जाति के उद्भव के साथ हुआ है एक कला के रूप में आने से पूर्व संगीत का प्रयोग मानव ने अपने मनोरंजन एवं ईश्वर स्तुति स्तुति के लिए किया जैसे-जैसे मानव जाति का विकास एवं परिष्करण हुआ वैसे-वैसे ही संगीत भी परिष्कृत हो कर एक उच्च स्तरीय कल के रूप में स्थापित हुआ संगीत के प्रारंभिक सूत्र के अनुसार वैदिक कालीन सामगान से ही भारतीय संगीत का विकास माना जाता है। संगीत शिक्षा का प्रारंभ भी यहीं से हुआ। वैदिक कालीन शिक्षाशाला जिन्हें चरण कहते थे, में साम प्रशिक्षण दिया जाता था। साम गान का अत्यंत व्यवस्थित रूप और उसके विधि विधान का पर्याप्त प्रसार हो जाने के कारण धीरे-धीरे विशिष्ट प्रशिक्षण की दृष्टि से प्रशिक्षण केंद्रों के रूप में गुरुकुल या गुरु आश्रमों का निर्माण होने लगा। इन आश्रमों में साम का प्रशिक्षण मौखिक रूप से ही दिया जाता था (सक्सेना 48)

इस प्रशिक्षण प्रणाली में पाठ्यक्रम का अनुमान निम्न उद्धरण से लगाया जा सकता है- 'प्राचीन काल का पाठ्यक्रम वर्ण व्यवस्था ,जटिल दर्शन तथा विशिष्ट लक्ष्य संधान से नियमित हुआ करता था। विभिन्न वर्णों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम होने पर भी सामान्य रूप से पाठ्यक्रम का स्वरूप समान रहता था'। (परांजपे 133)

अतः प्रशिक्षण का समावेश हो जाने के कारण ही सामवेद के विशिष्ट सिध्दांतों का अध्ययन करने के लिए अनेक साम परिषदों की स्थापना हुई। इन परिषदों के माध्यम से जिन ग्रंथों की रचना हुई वे 'प्रतिशाख्य' कहलाए। इस प्रकार वैदिक साहित्य में साम संगीत के क्रियात्मक व शास्त्रात्मक दोनों प्रकार के प्रशिक्षण के संकेत प्राप्त होते हैं।(सकसेना 46-49)

वैदिक काल में संगीत कला को मानव के व्यक्तित्व के विकास का एक अभिन्न अंग मानते हुए उसे शिक्षा का एक अंग स्वीकार किया गया। वैदिक काल से प्रवाहित शिक्षा केंद्रों की यह व्यवस्था परवर्ती काल में भी यूं ही चलती रही, जैसे- बौद्ध काल एवं जैन काल में तक्षशिला एवं काशी शिक्षा के प्रमुख केंद्र बने और छठी से सातवीं सदी में नालंदा विश्वविद्यालय आदि।

मध्यकाल में मुस्लिमों के भारत पर आक्रमण करने के पश्चात संगीत का आध्यात्मिक एवं कलात्मक स्वरूप आहत हुआ। यवन संस्कृति के प्रभाव से संगीत में श्रृंगारिक भावनाओं का प्रवेश हुआ। भारतीय संगीत में यवनों की रुचि एवं उनके संगीत के प्रभाव से स्वरूप में भी परिवर्तन आया किंतु जहां तक संगीत शिक्षा के विकास की बात है तो उसे काल में इस दिशा में कोई प्रयास नहीं हुए।

" प्राचीन काल में जहां संगीत शिक्षा का व्यवस्थित स्वरूप, संगीत शालाएं थीं एवं गुरु शिष्य परंपरा का आदर्श विद्यमान था वहां मध्यकाल में संगीत शिक्षा की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी।'(Willard,106)

मध्यकाल में कलाकार मुख्यतः राजाश्रय में थे। इस काल में संगीत ग्रंथों की रचना अत्यधिक मात्रा में हुई जो की व्यक्तिगत प्रयत्नों का परिणाम था , साथ ही संगीत क्रियात्मक रूप से नवीन प्रयोगों को अपनाते हुए एक से दूसरे व्यक्ति तक प्रवाहित होता रहा जो कि आगे चलकर घरानों के उद्भव का मूल कारण बना। इस काल में शिक्षा प्रणाली, संगीत शिक्षा केंद्रों या पाठ्यक्रम आदि का कोई उल्लेख नहीं प्राप्त होता।

मुस्लिम काल की समाप्ति के साथ ही आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन काल स्थापित हुआ।

ब्रिटिश कालीन शिक्षा का केंद्र बिंदु 'अंग्रेजी भाषा 'थी। साथ ही ,वैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रभाव भी शिक्षा पर देखा गया। अब शिक्षा जीवोकोपार्जन के उद्देश्य से होने लगी। शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात परीक्षा एवं परीक्षा उत्तीर्ण पश्चात उपाधि प्रदान की जाने लगी।

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक भारत में ब्रिटिश सरकार का आधिपत्य स्थापित हो गया था और देश के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी पक्षों में हलचल पैदा हो गई जिसके कारण संगीत कला को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। संगीत कला की बागडोर राजघराने, साहूकारों तथा सेठों के हाथ में पहुंच गई। साथ ही घरानेदार गुरुजनों व उस्तादों की संकीर्ण मानसिकता के कारण संगीत कला का स्तर गिर गया जिसके परिणामस्वरुप साधारण जनता के लिए इस कला को प्राप्त करना कठिन हो गया किंतु ब्रिटिश काल में संगीत कला को पुनः एक नवीन जीवन की प्राप्ति हुई क्योंकि इसी काल में मौला बख्श, पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर तथा पंडित विष्णु नारायण भातखंडे आदि महान विभूतियों के प्रयासों से संगीत कला का विकास हुआ एवं संगीत शिक्षा को पुनः सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ।

इन महान विभूतियों के प्रयासों से संगीत को शिक्षा के अन्य विषयों के समान महत्व दिया जाने लगा तथा इन्होंने केवल संगीत शिक्षण संस्थानों की स्थापना नहीं की तथापि आधुनिक युग में संगीत शिक्षा को विश्वविद्यालयों में स्थान देने का श्रेय भी इन्हीं महान विभूतियों को जाता है।

'संगीत में निश्चित अभ्यासक्रम, नियमित कक्षाएं और परीक्षाओं का प्रारंभ सर्वप्रथम पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी द्वारा हुआ।' (देवधर 47)

' पंडित भातखंडे संगीत शिक्षा को विश्वविद्यालयी अभ्यासक्रम का सम्मान दिलाना चाहते थे। किसी भी विद्या की उन्नति के लिए जो बुनियादी साहित्य की आवश्यकता होती है वह सब उन्होंने संगीत के लिए उपलब्ध करा दिया था। संगीत शिक्षा को प्राप्त कर विद्यार्थी केवल गायक ही नहीं अपित अच्छा शिक्षक, प्रशासक तथा शास्त्रकार बने। यह पंडित भातखंडे जी की कामना थी और इसी दृष्टि से वह प्रयत्नशील भी रहे (श्रीखंडे 205)

इन्हीं प्रयासों के फल स्वरुप भारत में सर्वप्रथम बड़ौदा विश्वविद्यालय में संगीत विषय का समावेश हुआ तथा 1952 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पंडित ओंकार नाथ ठाकुर के प्रयासों से संगीत विभाग प्रारंभ हुआ। इस प्रकार भारत के दो विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों की भांति संगीत की शिक्षा का प्रारंभ हुआ।

संगीत को विश्वविद्यालयों में स्थान प्राप्त हो जाने से अन्य सभी विषयों के समान ही संगीत में भी विश्वविद्यालयों द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम, कक्षाएं ,परीक्षाएं तथा उपाधियां आदि बातों को महत्व प्राप्त हुआ।

संस्थागत शिक्षण प्रणाली की आवश्यकता - -'पाठ्यक्रम'

संगीत के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पठनीय सामग्री का सुव्यवस्थित रूप पाठ्यक्रम कहलाता है। पाठ्यक्रम के अंतर्गत वे सभी अनुभव आते हैं जिन्हें विद्यार्थी कक्षा के भीतर तथा कक्षा के बाहर प्राप्त करता है इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्यों एवं लक्षण की पूर्ति में पाठ्यक्रम की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है।(शर्मा 95)

पाठ्यक्रम को अभ्यासक्रम भी कहा जाता है। इसमें अभ्यास और उसका क्रम अर्थात 'पाठ्य सामग्री का क्रम' इस प्रकार का अर्थ निहित है। (श्रीखंडे 215)जब किसी विषय का ज्ञान विद्यार्थियों तक पहुंचाने हेतु उस विषय के विशेषज्ञों द्वारा निश्चित की गई जानकारी को एकत्रित करके उन्हें एक निश्चित व्यवस्थित रूप प्रदान कर उसका अभ्यास करवाया जाता है तो उसे 'अभ्यासक्रम या पाठ्यक्रम' कहा जाता है। संगीत में भी ज्ञान वृद्धि हेतु तथा संगीत शिक्षा को व्यवस्थित रूप से प्रदान करने के लिए निश्चित पाठ्यक्रम अति आवश्यक होता है।संगीत की संस्थागत सामूहिक शिक्षण प्रणाली में बुद्धिमान तथा साधारण योग्यता वाले, दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों को एक साथ शिक्षित कर पाएं, ऐसा ही पाठ्यक्रम बनाया जाता है।

प्रारंभिक पाठयक्रम से लेकर वर्तमान तक के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठयक्रमों की विषय वस्तु पर यदि दृष्टिपात करें तो कुछ परंपरागत विषय वस्तु है जो प्रारंभ से लेकर आज तक पाठ्यक्रमों में समान रूप से सम्मिलित की जाती हैं जैसे संगीत विषयक पारिभाषिक शब्द ,राग वर्णन एवं तुलनात्मक अध्ययन, वाद्यों के प्रकार एवं उनका वर्णन, विभिन्न स्वरलिपि पद्धतियों का ज्ञान ,भारतीय संगीत का इतिहास (प्राचीन काल से आधुनिक काल तक), राग वर्गीकरण का ऐतिहासिक विकास क्रम, ध्वनि सिद्धांत ,कंठ संवर्द्धन, रागों का समय सिद्धांत, सौंदर्य एवं रस सिद्धांत, संगीत एवं मनोविज्ञान, संगीत एवं दर्शन आदि।

इसी प्रकार क्रियात्मक संगीत पाठ्यक्रम में विलंबित एवं द्रुत ख़्याल ,मसीतखानी एवं रज़ाखानीगत,तान -आलाप- तोड़े, राग विश्लेषण, मंच प्रदर्शन आदि पेपर्स लगभग प्रत्येक विश्वविद्यालय संगीत पाठ्यक्रम में दिखाई देते हैं।

उच्च स्तरीय संगीत शिक्षण संस्थाओं ने पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षा के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए होता है विद्यार्थियों की रचनात्मक कार्य में रुचि का विकास कैसे संभव है ? उनका शारीरिक ,बौद्धिक ,मानसिक ,नैतिक ,सौंदर्यात्मक ,सामाजिक सांस्कृतिक आध्यात्मिक तथा व्यावसायिक विकास कैसे किया जा सकता है? पुरानी परिपाटी पर चलते आ रहे पाठ्यक्रमों में नई पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन कैसे संभव है? (शर्मा 95) विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में उच्च शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों को अनुसंधान एवं आविष्कारों की ओर प्रेरित करने में भी पाठ्यक्रम सहायक सिद्ध होता है।

पाठ्यक्रम को प्रासंगिक बनाने हेतु उसका अद्यतिकरण आवश्यक है और इस हेतु वर्तमान में बहुत से विश्वविद्यालयों ने संगीत विषय के पाठ्यक्रम में कुछ नवीन आयाम सम्मिलित किए हैं। NEP 2020 के अनुसार अतःअनुशासनात्मक दृष्टिकोण, skill enhancement course(SEC) की विशेष भूमिका है। साथ समय के अनुरूप संगीत विषय को अन्य विषयों की भांति रोजगार उन्मुख एवं व्यवसाय उन्मुख बनाने की भी आवश्यकता है संगीत पाठ्यक्रम के परंपरागत तत्वों की महता को बनाए रखते हुए इसमें अद्यतिकरण की प्रक्रिया की जानी आवश्यक है और देश की बहुत से विश्वविद्यालय में इस दिशा में प्रयास भी प्रारंभ कर दिया है।

ख्याल गायन के साथ अन्य गायन शैलियों का प्रशिक्षण

परंपरागत पाठ्यक्रमों में मुख्य रूप से ख्याल गायन शैली का प्रशिक्षण दिया जाता था किंतु आज श्रोताओं को नित्य प्रति कुछ नवीन सुनने की चाह रहती है जिसके चलते यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अन्य उपशास्त्रीय गायन शैलियां भी अपने पाठ्यक्रम के माध्यम से सीखें और उन्हें मंच प्रदर्शन हेतु तैयार करें। दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए पाठ्यक्रम में skill enhancement course के अंतर्गत ठुमरी -दादरा का विशेष पेपर जोड़ा गया है जिसके अंतर्गत दो प्रकार की ठुमरी, एक राग में दादरा-ठुमरी ,इनके के साथ बजने वाली तालों की लयकारियां, इनके साथ प्रयुक्त संगत वाद्य का ज्ञान आदि विषय वस्तु को सम्मिलित किया गया है जिससे विद्यार्थी इन शैलियों का गहन अध्ययन कर सके और भविष्य में इस क्षेत्र में करियर बना पाएं।

मंच प्रदर्शन के अतिरिक्त करियर के विकल्प

संगीत एक प्रदर्शन कला है अतः इसका अध्ययन करने वाला प्रत्येक विद्यार्थी मंच कलाकार बनने हेतु प्रवेश लेता है किंतु आधुनिक युग के परिवर्तनों के परिणाम स्वरुप संगीत विषय के विद्यार्थियों के पास मंच कलाकार बनने के साथ ही अन्य बहुत से विकल्प उपस्थित हैं जैसे - साउंड इंजीनियरिंग , स्टूडियो रखरखाव, इवेंट मैनेजमेंट, वाद्य निर्माता, वाद्ययंत्रों का रखरखाव, संगीत पत्रकारिता, म्यूज़िक थैरेपिस्ट ,संगीत शिक्षक आदि। ऐसे विभिन्न रोजगार उन्मुख एवं व्यवसाय उन्मुख क्षेत्र हैं जिन्हें आज पाठ्यक्रम में स्थान प्राप्त होना चाहिए।

संगीत विषय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर इन उपविषयों को अनिवार्य रूप से जोड़ा जाए तो विद्यार्थियों को भविष्य में अपने रोज़गार चयन हेतु पृष्ठ पृष्ठभूमि प्राप्त हो सकती है। दिल्ली विश्वविद्यालय में SEC course के अंतर्गत MAINTENANCE & REPAIRING OF MUSICAL INSTRUMENTS IN HINDUSATNI MUSIC पेपर सम्मिलित किया गया है जिसमें अवनद्ध, तत, वाद्य को मिलाने का

ज्ञान, वाद्य निर्माण कला पर चर्चा, वाद्यों की रखरखाव एवं मरम्मत का ज्ञान, तार बांधना पर्दे लगाना, बद्दी लगाना, वाद्य निर्माण में प्रयुक्त सामग्री का अध्ययन, वाद्य निर्माण कार्यशालाओं में जाकर प्रशिक्षण लेना आदि विषय वस्तु को सम्मिलित किया गया है। आज के समय में जब विज्ञान एवं तकनीकी ने हमारे हस्त कौशल कलाओं के लिए संकट खड़ा किया है ऐसे में इस विषय को अध्ययन करना और उसमें विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर विद्यार्थी न केवल परंपरागत कला को सीख रहे हैं बल्कि उसे संरक्षित भी कर रहे हैं और इसी को भविष्य में वह अपना व्यवसाय भी बना सकते हैं।

अंत:विषयक दृष्टिकोण एवं संगीत

NEP 2020 का एक मुख्य आयाम है- अंत:विषयक दृष्टिकोण, जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी अपने मुख्य विषय के साथ अन्य विषय का अध्ययन करना होता है ।संगीत विषय के विद्यार्थी गायन, वादन, नृत्य में से किसी एक विधा का मुख्य रूप से चयन करते हैं जिसमें वह स्नातक स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्राप्त करते हैं ।यह तीनों ही विधाएं एक दूसरे पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए एक तबला विषय का विद्यार्थी यदि तबला संगत करना चाहता है तो उस गायन व नृत्य के तत्वों की भी जानकारी होनी चाहिए क्योंकी ताल में ठेके का स्वर संचालन कहीं बातों पर निर्भर करता है जैसे - राग, बंदिश ,बढ़त,तानकारी,सरगम आदि । तबले की संगत का स्वर संचालन और विविधताएं इन्हीं कारकों पर आधारित होती हैं। एक तबला वादक को निश्चित रूप से कोई दूसरा वाद्य संचालन व गायन सीखना पड़ता है ।

इसी प्रकार गायक को तबला वादन का ज्ञान प्राप्त करना और उसका अभ्यास करना आवश्यक है । तबला वादन के सौंदर्य तत्वों की समझ एक गायक को भी होनी आवश्यक है तभी वह अपने गायन के दौरान तबला वादक को उसका कला कौशल प्रस्तुत करने का स्थान दे पाएगा। यह सभी तत्व संगीत पाठ्यक्रम को अंत:विषयक बनाने हेतु प्रेरित करते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में SEC course के अंतर्गत तबला व हारमोनियम विषय के पेपर जोड़े गए हैं जिससे गायन/ सितार/

वायलिन/ नृत्य आदि विषयों के विद्यार्थी इस पेपर का चयन कर कौशल प्राप्त करें l इसमें हारमोनियम विषय का पेपर विद्यालय शिक्षक बनने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है क्योंकि विद्यालय संगीत शिक्षक के लिए हारमोनियम वादन अनिवार्य रहता है l अंत:विषयक दृष्टिकोण में संगीत के साथ विज्ञान, गणित, कंप्यूटर, मनोविज्ञान ,प्रबंधन, साहित्य, दर्शन,का अध्ययन भी करवाया जाना चाहिए l

संगीत चिकित्सा के क्षेत्र में करियर बनाने हेतु मनोविज्ञान, साउंड इंजीनियरिंग, वाद्य निर्माण, स्टूडियो रखरखाव जैसे करियर विकल्पों के लिए कंप्यूटर, फिजिक्स, गणित जैसे विषयों का ज्ञान आवश्यक है l

इसी प्रकार इवेंट मैनेजमेंट, संगीत पत्रकारिता आदि के लिए साहित्य, प्रबंधन एवं कंप्यूटर जैसे विषयों का ज्ञान आवश्यक है l संगीत के साथ इन विषयों के अध्ययन की महत्ता को समझते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, संस्कृत आदि को सम्मिलित किया है जिसमें से विद्यार्थी को एक विषय का चयन करना होता है।

समुचित ऑर्थोपार्जन हेतु पाठ्यक्रम का अद्यतिकरण

आधुनिक काल में अन्य व्यवसाय क्षेत्र जैसे इंजीनियरिंग ,मैनेजमेंट की तरह ही समुचित ऑर्थोपार्जन वाले संगीत कलाकार भी समाज में स्वीकार्य होने चाहिए ।

आज के समय में संगीत पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल यह नहीं होना चाहिए कि विद्यार्थी की सृजनात्मक क्षमता विकसित हो ताकि वह गुणवत्तापूर्ण संगीत की सराहना कर सके और उसे अपना सके l बल्कि आज के समय में उद्देश्य यह होना चाहिए की समुचित ऑर्थोपार्जन वाले संगीतकार, जिन्हें समुचित ज्ञान प्राप्त हो, तैयार हो सके । पाठ्यक्रम हेतु ऐसी विषय वस्तु तथा रोजगार क्षेत्र की पहचान की जाए जिनके माध्यम से एक संगीतकार ऑर्थोपार्जन कर सकता है ।आज के युग में संगीत सीखने के साथ-साथ उसका प्रभावशाली रूप से प्रस्तुतीकरण भी आवश्यक है l विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम में पर्सनैलिटी डेवलपमेंट एवं संप्रेषण कौशल को भी सम्मिलित करना चाहिए ताकि मंच से बाहर भी वह स्वयं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना सीखें और विभिन्न माध्यमों जैसे सूचना प्रौद्योगिकी या आमने-सामने आदि सभी रूप में प्रभावी संप्रेषण की क्षमता विकसित हो। साथ ही मार्केटिंग मिक्स के 4 p' (product ,price ,place, promotion) को समझना भी आज के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होगा क्योंकि अपने संगीत को किस तरह से जनता तक पहुंचाना है यह इन 4p' से ही सिखाया जा सकता है।

संगीत शिक्षक प्रशिक्षण की महत्ता

संगीत विषय में स्नातक- स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों हेतु संगीत शिक्षक के रूप में करिअर बनाने का विकल्प भी रहता है l इस हेतु स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स को जोड़ कर एकीकृत कोर्स के रूप में करने का विकल्प होना चाहिए जिससे प्रारंभ से ही संगीत शिक्षा के साथ ही शिक्षण कौशल की भी शिक्षा विद्यार्थी प्राप्त कर सकते हैं l इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि संगीत विषय के शिक्षण हेतु कुशल शिक्षक प्राप्त होंगे क्यूंकि प्रशिक्षित संगीत शिक्षकों के अभाव के कारण बहुत से विश्व विद्यालयों में संगीत पाठ्यक्रमों में विद्यमान विशेषीकृत विषय वस्तु का शिक्षण नहीं हो पाता है और विद्यार्थी ज्ञान से वंचित रह जाते हैं l

शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय संगीत से जोड़ना

आज विद्यार्थियों में शास्त्रीय संगीत के प्रति उदासीनता का भाव है l इसका मूल कारण है - विद्यार्थी जिस प्रकार के संगीत के आदि हैं उनका वर्तमान पाठ्यक्रम में उल्लेख तक नहीं है। संगीत का विकास लोकप्रिय संगीत से ही हुआ है इसलिए संगीत शिक्षण में एक ऐसा सेतु होना चाहिए जो अपने समय के लोकप्रिय संगीत को शास्त्रीय संगीत से जोड़ सके। इसके लिए ऐसी गतिविधियों का समायोजन पाठ्यक्रम में होना चाहिए जो लोकप्रिय संगीत का प्रतिनिधित्व करती हों।

इंटर्नशिप को पाठयक्रम में विशेष महत्व

संगीत विषय मूलतः क्रियात्मक है और इसका आधार आज भी गुरु शिष्य परंपरा ही है। उच्चस्तरीय मंच कलाकार बनने हेतु विद्यार्थी को शास्त्रीय संगीत का गहन अध्ययन एवं अभ्यास किसी एक गुरु के सानिध्य में रहकर ही प्राप्त हो सकता है। संस्थागत सामूहिक शिक्षण पद्धति की अपनी कुछ सीमाएं हैं जिसके कारण मंच कलाकार बनना आज भी पूर्णतः संभव नहीं है अतःस्नातक -स्नातकोत्तर कोर्स के विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में एक इंटर्नशिप का प्रावधान हो जिसमें विद्यार्थी अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार किसी भी गायन शैली से संबंधित प्रतिष्ठित कलाकार से भी शिक्षा ग्रहण करना चाहे तो कर सकें। इसी प्रकार संगीत निर्देशन ,संगीत निर्माण (विज्ञापन या पार्श्व संगीत हेतु), आदि के लिए संगीत उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों,निर्देशकों के साथ या कंपनियों में जाकर प्रशिक्षण भी विद्यार्थियों द्वारा किया जा सकता है। इसी प्रकार वाद्य निर्माण शालाओं में भी इंटर्नशिप करने का अवसर दिया जाए l NEP 2020 में इंटर्नशिप का प्रावधान किया गया है ताकि क्रियात्मक प्रशिक्षण भी विद्यार्थी को प्राप्त हो सके जो भविष्य में उनकी रोजगार तथा व्यवसाय का आधार बन सके। पुणे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सामूहिक शिक्षण प्रणाली के साथ-साथ घरानेदार प्रतिष्ठित कलाकारों से संगीत शिक्षा ग्रहण करने का प्रावधान इसी प्रकार का प्रयोग है।

निष्कर्ष

उच्च स्तरीय संगीत शिक्षा को और अधिक व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक बनाने के लिए साथ ही ,अन्य व्यावहारिक पाठ्यक्रमों जैसे इंजीनियरिंग, मेडिकल या सूचना प्रौद्योगिकी के समान स्तर पर लाने के लिए हमें मौजूदा संगीत कला पाठ्यक्रमों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है जो आज के बदलते परिदृश्य में एक कलाकार बनने के अतिरिक्त सामाजिक व्यवस्था और व्यवसायोन्मुखी दृष्टिकोण के साथ एकीकृत हो सके। पाठ्यक्रम में गुणात्मक परिवर्तन में पाठ्यक्रम की उन विशेषताओं को महत्व दिया जाना चाहिए जो वर्तमान परिस्थितियों में संगीत विद्यार्थियों के लिए आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी हो जिसमें वह व्यावसायिक सफलता अर्जित कर सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ

सक्सेना, डॉ मधुबाला, भारतीय संगीत शिक्षक प्रणाली एवं उसकी वर्तमान स्तर , हरियाणा साहित्य प्रशासन , चंडीगढ़ ,1990
परांजपे , शरद चंद्र श्रीधर भारतीय संगीत का इतिहास चौखंबा संस्कृत संस्थान ,वाराणसी ,1969
Willard, capt. N, A Treatise on the music of hindoostan, Baptist mission press,calcutta,1834.
देवधर, प्रो.बी आर ,गायचार्य पंडित विष्णु दिगंबर ,अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल ,मुंबई ,संस्करण 2012
गोपाल श्रीखण्डे,डॉ सुरेश, हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, अभिषेक पब्लिकेशंस ,चंडीगढ़, प्रथम संस्करण, 1993.
शर्मा, डॉ पुष्पेंद्र, संगीत की उच्चस्तरीय शिक्षण प्रणाली, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1992
Tagore,Raja sir surendra mohan ,chaukhamba sanskrit series office,varanasi,1963
जोशी, उमेश ,भारतीय संगीत का इतिहास, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, आगरा ,1984
कपूर, तृप्त, उत्तर भारत में संगीत शिक्षा ,हरमन पब्लिकेशन ,नई दिल्ली ,संस्करण ,1989
शर्मा ,जयचंद्र, संगीत शिक्षण एवं शिक्षक, संगीत भारती शोध विभाग ,बीकानेर, प्रथम संस्करण ,1966
https://www.du.ac.in/index.php?page=revised-syllabi-ug